B.A. Part I, History Hon's

Paper II, Unit-3

पाठ : फ्रान्स के राजा लुई चौदहवाँ का राष्ट्रीय राज्य के निर्माण में योगदान

लुई चौदहवाँ के निरंकुश शासन के अधीन फ्रान्स के राष्ट्रीय राज्य का चरमोत्कर्ष हुआ, परन्तु इसकी स्वेच्छाचारिता एवं अपव्ययता के कारण राज तंत्र के पतन का मार्ग भी प्रशस्त हुआ, जिसकी चरम परिणति 1789 की फ्रान्सीसी राज्यक्रान्ति के रूप में हुई। फिर भी यह माना जा सकता है कि वह एक शक्तिशाली शासक था, जिसके संरक्षण में पेरिस कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में पूरे यूरोप का केन्द्र बन गया।

अपने पिता लुई तेरहवें की मृत्यु के बाद 1638 ई० में लुई चौदहवाँ पाँच वर्ष की आयु में फ्रान्स का राजा बना। स्वाभाविक रूप से 1661 में अपने मृत्यु पर्यन्त फ्रान्स का मंत्री कार्डिनल मेजेरिन ही फ्रान्स का वास्तविक शासक था। मेजेरिन एक सुयोग्य शासक था, जिसने न केवल फ्रान्स के सीमा का विस्तार किया, अपितु फ्रान्स के कुलीनों एवं सामन्तों का दमन कर लुई चौदहवें के निरंकुश राज-सत्ता को निष्कंटक बना दिया। मेजेरिन ने फ्रान्स के लिए अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री रिशलू द्वारा प्रारम्भ युद्ध को जारी रखते हुए पवित्र रोमन साम्राज्य से आल्सास और जर्मनी में राइन नदी तट तक प्रदेश हासिल किया। साथ ही फ्रान्सीसी कुलीनों के फरोंडे विद्रोह का दमन कर बड़े-बड़े सामन्तों की शक्ति को छीन कर दिया। 1661में मेजेरिन की मृत्यु के बाद फ्रान्स की सारी राजनीतिक शक्ति महत्वाकांक्षी युवा राजा लुई चौदहवें के हाथों में आ गई।

लुई चौदहवें की शिक्षा-दीक्षा इस प्रकार हुई थी कि वह राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त में विश्वास करने लगा। फलतः वह अपनी शक्ति को असीम एवं निरंकुश मानता था। इसका मानना था कि राजा का विरोध ईश निंदा के समान है और ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में वह राज्य का सर्वोच्च सर्वसत्तावान निरंकुश प्रशासक है। तभी तो वह कहा करता था कि, "मैं ही राज्य हूँ"

लुई चौदहवाँ ने सर्वप्रथम केन्द्रीय शासन का पुनर्गठन इस प्रकार किया कि राज्य की सारी शक्तियाँ उसके हाथों में संकेन्द्रित हो गई और राज्य के मंत्री उसके आज्ञाकारी सेवक बन गए। मंत्री ही नहीं अपितु सचिवों, सहायकों, प्रान्तों के गवर्नर आदि सभी उच्च पदों पर वह अपने मनोनुकूल व्यक्तियों की नियुक्ति करता था। वह अपने प्रशासन पर कड़ी निगरानी रखता था और इसे 'राजा का कार्यव्यापार' कहता था।

लुई चौदहवें ने पेरिस से 19 किलोमीटर की दूरी पर वर्साय में खूबसूरत शीशमहल का निर्माण करवाया। यह एक विशाल, भव्य और आकर्षक महल था, जिसमें राज परिवार के साथ-साथ राजा के सभी मंत्रियों, पदाधिकारियों, बड़े सामन्तों

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

आदि के साथ-साथ असंख्य सेवकों, परिचारकों और दास-दासियों के रहने की व्यवस्था थी। जाहिर है कि वर्साय का शीशमहल राजप्रासाद ही नहीं अपितु सचिवालय भी था, जहाँ भव्य दरबार का नियमित आयोजन होता था। राज्य के सभी बड़े पदाधिकारी, सामन्त और चर्च अधिकारी लुई चौदहवाँ के अनुचर बन गए, जिन्हें राजा की चाटुकारिता करनी पड़ती थी। बदले में इन्हें शानोशौकत और विलासिता का जीवन मिला था। शीश महल के निर्माण में अपार धन लगा था और इसके संचालन में धन पानी की तरह बहने लगा।

राज्य के आर्थिक विकास और राजकीय कोष की वृद्धि के लिए लुई चौदहवें ने अपने एक विश्वासपात्र सुयोग्य व्यक्ति कोलबर्ट को वित्तमंत्री नियुक्त किया, जिसे वित्तीय प्रबंधन के अलावा सार्वजनिक सेवा, जहाजरानी, व्यापार, कृषि और उपनिवेश विभाग का भी प्रभार भी दिया। कोलबर्ट ने सबसे पहले कर उगाही पर ध्यान दिया और इसके लिए विश्वासी एजेंटों की नियुक्ति की। कृषकों पर राजस्व के भार को कम किया और इस कमी की भरपाई के लिए सीमा शुल्क में वृद्धि की। यातायात एवं परिवहन के साधनों का विस्तार को किया गया, जिससे व्यापार वाणिज्य की वृद्धि हुई। कृषि एवं पशुपालन को राजकीय संरक्षण प्रदान किया गया। जहाजरानी उद्योग के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। नौ सेना को मजबूत किया गया और उपनिवेशीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया। कोलबर्ट ने वेस्ट इंडिज में मार्टिनीक एवं गुडालोप के उपनिवेश खरीदे और कनाडा तथा लुइसियाना में नए उपनिवेशों की स्थापना की। इसी समय भारत, सेनेगल और मेडागास्कर में फ्रान्सीसी बस्तियाँ स्थापित की गईं। इस प्रकार लुई चौदहवें के शासनकाल में फ्रान्स का सर्वांगीण आर्थिक विकास हुआ और शाही खजाना में धन की वर्षा होने लगी। हालांकि इसी हिसाब से वर्साय के शीशमहल और पेरिस के सौंदर्यीकरण पर व्यय भी बढ़ता चला गया।

लुई चौदहवाँ साहित्य और कला का महान संरक्षक था। अब इसका शासनकाल फ्रेंच साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। कोर्नेल, मोलायर, रेसिन, मदाम डि सेविन, ला फान्टेन, बोसेद जैसे प्रख्यात साहित्यकार इसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। लुई चौदहवाँ के संरक्षण में निरारदों, लेब्रून और मंसार जैसे नामी वास्तुकारों, तक्षकों एवं चित्रकारों ने वर्साय के शीशमहल को वास्तुकला का अति उत्कृष्ट उदाहरण ही नहीं, बल्कि पेरिस को अपने निर्माणकार्यों से यूरोप की सांस्कृतिक राजधानी बना दिया। पेरिस में वेधशाला का निर्माण किया गया और विज्ञान अकादमी की स्थापना की गई। कलात्मक सार्वजनिक भवनों और मेहराबों का निर्माण कर पेरिस को भी बड़े पैमाने पर किया गया, जिसके फलस्वरूप पेरिस आज भी दुनियाँ का प्रमुख पर्यटन स्थल माना जाता है।

लुई चौदहवाँ एक महत्वाकांक्षी एवं साम्राज्यवादी भी था

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

उसने अपनी नाविक एवं सैन्य शक्ति का पुनर्गठन कर साम्राज्य विस्तार पर ध्यान केन्द्रित किया। अपने दीर्घकालीन युद्धों के द्वारा लुई ने राइन नदी तक पहुँचने का प्रयास किया। अपने जीवनकाल में लुई चौदहवें ने तीन युद्ध संयोजित किए — हस्तान्तरण युद्ध, डच युद्ध और आगसबर्ग संघ का युद्ध। हस्तान्तरण युद्ध उसने स्पेन के विरुद्ध किया, जहाँ की राजकुमारी उसकी पत्नी थी और इसी आधार पर उसने स्पेनी नीदरलैंड फ्रान्स को हस्तांतरित करने की मांग की थी। इस युद्ध में बहुत अधिक सफलता नहीं मिली। पूरा स्पेनिश नीदरलैंड तो नहीं परन्तु इसके तीन किलेबंद शहरों पर उसका आधिपत्य कायम हो गया। डच युद्ध उसने हालैंड के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त करने के लिए किया था। शुरुआती विजय के बाद उसे असफलता ही हाथ लगी और काफी धन-जन की हानी उठानी पड़ी। लगभग इसी प्रकार का परिणाम आगसबर्ग संघ युद्ध में भी हुआ, जो उसने आस्ट्रिया के विरुद्ध संगठित किया था। अन्तिम परिणाम के तौर पर लुई को स्ट्रासबर्ग का प्रदेश प्राप्त तो हुआ, परन्तु इस युद्ध ने इसकी प्रसार नीति पर लगाम भी लगा दिया।

लुई चौदहवें के शासन के अन्तिम वर्षों में वर्साय के निर्माण एवं उसमें बढ़ते खर्चों तथा लगातार के युद्धों के कारण राजकोष खाली होने लगा। फिर भी यह मानने के ऐतिहासिक साक्ष्य मौजूद हैं कि लुई चौदहवें के शासनकाल में फ्रान्स एक खुशहाल एवं शक्तिमान राष्ट्रीय राज्य में ही परिणत नहीं हो गया, बल्कि वह यूरोपीय सभ्यता संस्कृति का सर्वोत्कृष्ट केन्द्र भी बन गया।

☐ डा. शंकर जय किसन चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
डी. बी. कालेज, जयनगर

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA